हिन्दी साप्ताहिक

Title Code:- UTTBIL00534

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -01 ♦ अंक-30 ♦देहरादून - रविवार 25 मई 2025 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्यः 1/-

मुख्यमंत्री ने एन.डी.आर.एफ के तृतीय पर्वतारोहण अभियान 'शौर्य' का किया फ्लैग ऑफ

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बुधवार को मुख्यमंत्री आवास स्थित मुख्य सेवक सदन देहरादून में राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (छक्स्थ) द्वारा आयोजित तृतीय पर्वतारोहण अभियान 'शौर्य' के फ्लैग ऑफ कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।

साहसिक पर्यटन की संभावनाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए सरकार संकल्पित

मुख्यमंत्री ने खुशी जाहिर करते हुए एनडीआरएफ के जवानों को तृतीय पर्वतारोहण अभियान जाने पर शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा निश्चित ही हमारे जवान इस अभियान में सफल होंगे एवं इस ट्रैक पर आने वाले अन्य पर्वतारोहियों को भी मार्गदर्शन देंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में साहसिक पर्यटन की अपार संभावनाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए राज्य सरकार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा विभिन्न क्षेत्रों में साहसिक गतिविधियों और खेलों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं एनडीआरएफ के जवान

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार, राज्य में ऐंगलिंग, साइक्लिंग, राफ्टिंग, ट्रेकिंग, पैराग्लाइडिंग जैसी अनेक साहसिक गतिविधियों को प्रोत्साहित दे रही है। राज्य में प्रतिवर्ष टिहरी वाटर स्पोर्ट्स , नयार महोत्सव जैसी अनेकों प्रतियोगिताएं आयोजित हो रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा एनडीआरएफ के जवान आपदा प्रबंधन में अपनी सेवाएँ देने के साथ साहसिक गतिविधि यों में भाग लेकर अपने कौशल का विस्तार और युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बन रहे हैं। उन्होंने कहा राज्य में आने वाली हर आपदा में एन.डी.आर.एफ के जवान ग्राउंड जीरो पर रहते हैं।

राज्य में आपदा प्रबंधन की मजबूती की दिशा में हो रहे हैं अनेक काम

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार आपदा प्रबंधन की मजबूती के लिए निरंतर कार्य कर रही है। आपदा प्रबंध न को आवश्यक संसाधनों, अत्याध ुनिक उपकरणों और नवीनतम तकनीक से जोड़ा जा रहा है। जवानों को आध ुनिक एवं तकनीकी रूप से दक्ष बनाने के लिए प्रशिक्षण केंद्रों की भी स्थापना की जा रही है। एसडीआरएफ और पुणे की इंडियन रेस्क्यू एकेडमी के बीच समझौता किया गया है। केंद्र सरकार के सहयोग से राज्य सरकार ने उत्तराखंड डिजास्टर प्रीपेयर्डनेस एंड रेसीलियेंट प्रोजेक्ट योजना को मंजूरी दी है। जिसके अंतर्गत लगभग 1480 करोड़ रुपए की राशि आपदा प्रबंधन तंत्र को मजबूत करने के लिए स्वीकृत की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्य में साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए मुखवा भ्रमण के दौरान कई साहसिक खेलों के प्रतिभागियों को स्वयं फ्लैग ऑफ कर रवाना किया था। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन और सहयोग से राज्य सरकार राज्य को साहसिक खेलों और ईको-टूरिज्म के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करने का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा अक्टूबर 2022 में प्रधानमंत्री ने माणा गांव से देश के सभी सीमांत के गांवों को देश के पहले गांव की संज्ञा दी थी।

डी.जी एनडीआरएफ पीयूष आनंद ने बताया कि ट्रैकिंग का यह अभियान उच्च हिमालय क्षेत्रों में रेस्क्यू करने के लिए भी सहायक सिद्ध होगा। इससे हमारे जवान उच्च हिमालय क्षेत्रों में रेस्क्यू अभियान करने के लिए सक्षम बनेंगे। उन्होंने कहा जब भी राज्य को एनडीआरएफ की आवश्कता पड़ती है, हम हमेशा तैयार रहते हैं। उन्होंने कहा टाइम ऑफ रेस्पॉन्ड को भी कम किया जा रहा है। इस अभियान में 44 सदस्यों का दल देहरादून, उत्तरकाशी, गंगोत्री, चिरबासा, भोजवासा, तपोवन तथा कीर्ति ग्लेशियर होते हुए लगभग 6,832 मीटर ऊँची श्केदार डोमशश चोटी को फतह करने के लिए जा रहे हैं। इस चुनौतीपूर्ण ट्रैक में दुर्गम पर्वतीय रास्ते और हिमनद हैं।

इस अवसर पर मुख्य सचिव आनंद बर्द्धन, डीजीपी दीपम सेठ, आपदा प्रबंधन सलाहकार समिति के उपाध्यक्ष विनय रोहेला, सचिव विनोद सुमन मौजूद रहे।

बालिकाओं के विरूद्ध होने वाले यौन शोषण की दी जानकारी

पौड़ी। राठ महाविद्यालय पैठाणी द्वारा राजकीय बालिका इंटरमीडिएट कालेज पाबौ में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान छात्र-छात्राओं को कई जानकारियां दी गई। बुधवार को आयोजित कार्यक्रम के तहत महाविद्यालय की छात्राध्यापिका साक्षी बंसल, भव्या खत्री, मेघा गजवान, रवीना राणा और उर्मिला चौहान ने बालिकाओं के विरुद्ध होने वाली यौन शोषण की विभिन्न घटनाओं पर स्कूल की छात्राओं से चर्चा की। बताया कि बालिका यौन शोषण की घटनाओं को अंजाम देने वाले अपराधी कौन हो सकते हैं व किन स्थानों पर इन घटनाओं को अंजाम दिया जाता है। इसके साथ ही बालिका शोषण के विभिन्न स्वरूपों जैसे घूरना, पीछा करना, भद्दी टिप्पणियां करना,छेड़ छाड़, डराना- धमकाना, शोषण, दुष्कर्म, ब्लैकमेलिंग ऑनलाइन माध्यमों से शोषण आदि पर विस्तृत चर्चा की गई।

जमीन बेचने की डील कर 4.51 लाख रुपये हड़पे

देहरादून(आरएनएस)। जमीन बेचने की डील कर 4.51 लाख रुपये हड़पने के आरोपी के खिलाफ रायपुर थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। मोनू कुमार निवासी विन्डसर कोर्ट, सहस्त्रधारा रोड ने कहा कि उन्होंने 16 दिसंबर 2024 को फिरोज अली के साथ डांडा धोरण स्थित 83 गज जमीन का सौदा 8.50 लाख रुपये में किया था। इस सौदे के तहत उन्होंने फिरोज अली को आरटीजीएस, गूगल पे और नकद के माध्यम से 4.56 लाख रुपये का अग्रिम भुगतान किया। अनुबंध में तय हुआ था कि बैनामा 15 मार्च तक कर दिया जाएगा। मोनू कुमार ने जनवरी में बैनामा करने के लिए कहा तो फिरोज अली ने टालमटोल शुरू कर दी। 11 फरवरी 2025 को दोनों पक्षों के बीच एक लिखित समझौता हुआ। जिसमें फिरोज अली ने 20 अप्रैल 2025 तक 4.56 लाख रुपये वापस करने का वादा किया।

मंत्री गणेश जोशी ने ली सैनिक कल्याण विभाग की समीक्षा बैठक

देहरादून। सैनिक कल्याण मंत्री गणेश जोशी ने आज अपने कैंप कार्यालय में सैनिक कल्याण विभाग की समीक्षा बैठक की। बैठक में विभागीय अधि

कारियों के साथ विभाग द्वारा संचालित योजनाओं एवं निर्माण कार्यों की प्रगति पर विस्तार से चर्चा की गई।

सैनिक कल्याण मंत्री गणेश जोशी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रदेश में सैनिक विश्राम गृहों, सैनिक कल्याण भवनों एवं शहीद द्वारों के निर्माण कार्यों में गति लाई जाए। उन्होंने सेवारत एवं भूतपूर्व सैनिकों को नगर निगम, नगर पालिका एवं नगर पंचायतों के माध्यम से भवन कर में छूट प्रदान करने की प्रक्रिया को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए।सैनिक कल्याण मंत्री गणेश जोशी ने अधि कारियों को निर्देशित किया कि देहरादून में ष्ऑपरेशन सिंदूर की अभूतपूर्व सफलताष् पर आधारित विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जाए, जिससे सैनिकों के अद्वितीय साहस और बलिदान को सम्मान दिया जा सके। बैठक के दौरान सैनिक कल्याण मंत्री जोशी ने शहीदों के परिजनों को दी जाने वाली अनुग्रह राशि को वर्तमान 10 लाख रुपये से बढ़ाकर 50 लाख रुपये करने के प्रस्तावों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने ष्ड्रोन दीदी योजनाष् के अंतर्गत वीर नारियों और वीरांगनाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण देने पर जोर दिया, ताकि उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सके। साथ ही उन्होंने उपनल के माध्यम से पूर्व सैनिकों को विदेशों में रोजगार दिलाने संबंधी कार्यों को भी तेजी से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। मंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन में लंबित सभी मामलों का शीघ्र निस्तारण किया जाए तथा संबंधित फाइलों की सतत मॉनिटरिंग एवं फॉलोअप सुनिश्चित किया जाए। इस अवसर पर सचिव दीपेंद्र चौधरी, निदेशक ब्रिगेडियर अमृत लाल, उपनल के प्रबंध निदेशक ब्रिगेडियर जेएनएस बिष्ट सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

आतिथ्यपूर्ण चारधाम यात्रा

गंगोत्री,यमुनोत्री च,बद्रीकेदारनाथय:।
चतुर्धामं समायाति, पुण्यभूमौ दिवं यथा।।
धर्मयात्रा शुभं यातु, भक्तजनहिताय च।
देवभूमौ सदा तिष्ठेत, हरिहराणां कृपारसा।।

अर्थात

गंगोत्री,यमुनोत्री,बद्रीनाथ और केदारनाथख्ये चार धाम मिलकर पुण्यभूमि में दिव्य-स्थान बनाते हैं। इस पवित्र यात्रा का आयोजन शुभ हो ,मंगलमय हो, जिससे भक्तों को कल्याण प्राप्त हो और देवभूमि पर सदा हरि-हर (विष्णु-शिव) की कृपा बनी रहे।

वर्तमान समय में देवभूमि उत्तराखण्ड में चारधाम यात्रा आयोजित है। यहां आयोजित होने वाली चारधाम यात्रा केवल एक भौतिक यात्रा नहीं है।यह एक गहन आध्यात्मिक अनुभूति है जो तीर्थयात्रियों की अटूट भक्ति और सामंजस्य क्षमता का अनवरत परीक्षण करता रहता है और आत्मिक सुख की प्राप्ति हेतु अनवरत प्रेरित करता रहता है। अचानक आने वाली बारिश, तूफान जैसी भौतिक चुनौतियों से परे,चारधाम यात्रा के प्रत्येक तीर्थस्थल में एक अनूठी आध्यात्मिक ऊर्जा विद्यमान है।मंदिरों में अभिगुंजित लयबद्ध मंत्र, कलकल छलछल करती लघु सरिताएं , हरहराते गिरते झरने,कलरव करते खगवृंद,गुनगुने धूप की खुशबू और लुभावने मनमोहक दृश्य तीर्थयात्री को आध्यात्मिकता के चरमोत्कर्ष का अनुभव कराते हैं।

यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ की रहस्यमय आभा तीर्थयात्रियों के मन-मस्तिष्क पर एक अमिट आध्यात्मिक छाप छोड़ती है,जो सांसारिकता और दिव्यता के बीच संबंध को संवृद्धि देती है। चारधाम यात्रा एक परम पवित्र अभियान पर निकलने का आमंत्रण है,जहाँ हिमाच्छादित हिमालय की विराटता, दिव्यता के सानिध्य का निमंत्रण भी देती है और सम्मोहित भी करती है।

बेहतरीन परिवहन सुविधाएं, उत्कृष्ट चिकित्सा सुविधाएं, सुरक्षा के अपूर्व इंतजाम सहित यादगार आतिथ्य के प्रयास अनवरत जारी हैं। चारधाम यात्रा के सुखद, आत्मीय आयोजन हेतु उत्तराखंड सरकार हर संभव तरीके से हर स्तर से प्रयासरत है ।दिव्यता से आलोकित , आध्यात्मिकता से ऊर्जस्वित देवभूमि का हर तीर्थ स्थल पावन है। इसके पावन माटी को अपने मस्तक पर धारण करते हुए इसको राष्ट्र का सिरमौर राज्य बनाने में अपना भी न्यूनाधिक सार्थक योगदान दे सकूं,यही सद्प्रयास है,यही सद्कामना है।

जय देवभूमि उत्तराखण्ड!!!जय भारत

डॉ.गार्गी मिश्रा

आइकॉनिक साड़ी

प्रो. रूबी कश्यप सूद

साड़ी, सिलाई रहित और लपेटकर पहना जाने वाला एक विशिष्ट परिधान है, जो हर भारतीय महिला की अलमारी में निश्चित तौर पर विशेष स्थान रखता है। यह प्रा. चीन काल से ही धारण किए जाने वाला एक ऐसा पुरातन परिधान है, जो खुद को आधुनिक भारत में महिलाओं की प्राथ. मिकताओं और जीवन शैलियों में आ रहे बदलावों के अनुकूल कुशलता से ढालकर अपना चलन बरकरार रखे हुए है। साड़ी किसी महिला के जीवन के विभिन्न चरणों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उसे पहनने वाली महिला की उसके साथ अलग-अलग तरह की भावनाएं जुड़ी होती हैं। शहरी भारत में, साड़ी किशोरावस्था से वयस्कता की दहलीज पर कदम रखने का प्रतीक है, जब एक वयस्क युवती अपने स्कूल के विदाई समारोह में साड़ी पहनने को तत्पर होती है। साड़ी किसी दुल्हन के साजो-सामान का महत्वपूर्ण भाग होती है, और संतान के जन्म के अवसर पर भी उपहार में दी जाती है। हाथ से बनी शानदार साडियों को उनसे जुड़ी यादों और भावनात्मक लगाव के कारण विरासत के रूप में सहेज कर रखा जाता है, जो दादी-नानी से लेकर मां और बेटियों तक जाती हैं। गरिमापूर्ण अंदाज से बांधी गई साड़ी को पूरे भारत में आतिथ्य, विमानन, स्वास्थ्य सेवा और अन्य उद्योगों में कार्यरत महिलाओं के विशिष्ट यूनिफा. र्म के रूप में भी पहचाना जाता है, जो विनम्रता, कुशलता और सुरुचि का संदेश देती है। भारतीय संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों की प्रतीक साड़ी राजनीति के क्षेत्र से जुड़ी नेत्रियों की भी पसंदीदा पोशाक है। बहुउपयोगी साड़ी विभिन्न अवतारों: शक्ति और श्रेष्ठता, आकर्षक और मनो. हर, सुरुचिपूर्ण एवं विनम्र, और विरासत व संस्कृति का मूर्त रूप है।

'साड़ी' शब्द की उत्पत्ति दक्षिण-पश्चिमी द्रविड़ शब्द श्सायरश से हुई है। साड़ी के अन्य स्वदेशी नामों में केरल में पुडवा, तमिलनाडु में सेलाई, महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश में लुगडा, उत्तर प्रदेश में लुगड़ी, उड़ीसा में सारही आदि शामिल हैं। साड़ी एक आयताकार लंबाई वाला कपड़ा होता है, जिसकी लंबाई 4 से 9 गज तक और चौड़ाई लगभग एक गज होती है। अपनी सिलाई रहित गुणवत्ता के कारण साड़ी हिंदू संस्कृति द्वारा निर्धारित शुद्धता के सिद्धांतों के अनुरूप है।

अनेक प्रकार के कपड़ों और टेक्स्चर में फ्लूइड साड़ी उपलब्ध है और इसे भारत के विभिन्न राज्यों से उपजी विभिन्न शैलियों में लपेटा (ड्रेप) जाता है। भारत की साडियों को क्षेत्र विशेष की विशिष्ट निर्माण तकनीक के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। पारंपरिक साडियां विविध प्रकार की होती हैं, जिनमें हाथ से बुनी हुई, कशीदाकारी, रेसिस्ट-डाई या प्रिंटेड शामिल हैं। उत्कृष्ट हथकरघा साडियों में उत्तर प्रदेश की बनारस ब्रोकेड, पश्चिम बंगाल की जामदानी, तमिलनाडु की कांजीवरम, महाराष्ट्र की पैठाणी, गुजरात की अश्वली, मध्य प्रदेश की चंदेरी और माहेश्वरी आदि शामिल हैं। कशीदाकारी वाली साडियों में उत्तर प्रदेश की चिकनकारी, पश्चिम बंगाल की कांथा और कर्नाटक की इलकल कसुती साड़ी शामिल हैं। परिष्कृत रेजिस्ट-डाइड साडियों में गुजरात से पटोला जैसे यार्न रेसिस्ट-डाई से लेकर ओडिशा से बंधा, आंध्र प्रदेश से पोचमपल्ली से लेकर राजस्थान और गुजरात से बंधनी जैसी फैब्रिक रेजिस्ट-डाइड की आकर्षक साडियां हैं। इस लपेटे या ड्रेप किए जाने वाले परिधान में आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान जैसे क्षेत्रों की विभिन्न प्रकार की ब्लॉक प्रिंटेड साडियां की व्यापक रेंज शामिल हैं।

इस बात पर गौर करना दिलचस्प होगा कि पूरे भारत में क्षेत्रीय, जातीय और जनजातीय समुदायों से विभिन्न साड़ी शैलियों और उसे लपेटने या ड्रेप करने की विधियों की उत्पत्ति हुई है। आयताकार साड़ी को तीन भागों में विभाजित किया गया है, फील्ड, लंबाई के मुताबिक बॉर्डर और अंतिम सिरा, इसे विभिन्न तरीकों से लपेटे जाने पर यह टू-डायमेंशनल कपड़े को शानदार ढंग से एक व्यवस्थित परिध ान में बदल देता है। एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी मानवविज्ञानी, शॉन्तेल बुलॉन्जे ने भारत में प्रचलित 100 से अधिक विभिन्न साड़ी लपेटने (ड्रैपिंग) की शैलियों को सू. चीबद्ध किया है। ड्रैपिंग की कुछ लोक. प्रिय शैलियों में निवी, जिसमें चुन्नट या प्लीट्स को सामने की तरफ टक किया जाता है और अंतिम सिरे या एंड-पीस को प्लीटेड कर बाएं कंधे पर लपेटकर पीछे की ओर लटकाया जाता है; महाराष्ट्र की काच्छा शैली, जिसमें पीछे की चुन्नट के साथ फोर्क्ड ट्राउजर जैसा प्रभाव उत्प. न्न होता है; उत्तरी शैली जिसमें अंतिम सिरे या एंड-पीस को पीछे से आगे की ओर छाती को ढंकते हुए लपेटा जाता है; और द्रविड़ शैली, जिसमें कमर के चारों ओर चुन्नट को झालर की तरह लपेटा जाता है; शामिल हैं। वस्त्र इतिहासकार रता कपूर चिश्ती ने युवा पीढ़ी को साड़ी पहनने के प्रति आकर्षित करने के लिए साड़ी को 108 तरीकों से लपेटने की कला में महारत हासिल की है, जिससे यह गाउन, स्कर्ट या पलाजो की तरह दिखाई देती है।

पर्यावरण : असरकारी आवाज उठे

भारत डोगरा

विश्व में 'डूमस्डे क्लाक' अपनी तरह की प्रतीकात्मक घड़ी है जिसकी सुइयों की स्थिति के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया जाता है कि विश्व किसी बड़े संकट की संभावना के कितने नजदीक है।

इस घड़ी का संचालन 'बुलेटिन ऑफ एटोमिक साइंटिस्ट्स' नामक वैज्ञानिक संस्थान द्वारा किया जाता है। इसके परामर्शदाताओं में 15 नोबल पुरस्कार विजेता भी हैं। ये सब मिलकर प्रति वर्ष तय करते हैं कि इस वर्ष घड़ी की सुइयों को कहां रखा जाए। इस घड़ी में रात के 12 बजे को धरती पर बहुत बड़े संकट का पर्याय माना गया है। घडी की सुइयां रात के 12 बजे के जितने नजदीक रखी जाएंगी, उतनी ही किसी बड़े संकट से ध रती (और उसके लोग व जीव) के संकट की स्थिति मानी जाएगी। 2020-21 में इन सुइयों को (रात के) 12 बजने में 100 सेकेंड पर रखा गया। संकट के प्रतीक 12 बजे के समय से इन सुइयों की इतनी नजदीकी कभी नहीं रही। दूसरे शब्दों में, यह घड़ी दर्शा रही है कि इस समय धरती किसी बहुत बड़े संकट के सबसे अधिक नजदीक है। इस समय यह चर्चा है कि निकट भविष्य में डूमस्डे से दूरी को और कम किया जाएगा क्योंकि 2022 में पर्यावरण व युद्ध के खतरे बढ़ गए हैं। 'डूमस्डे घड़ी' के वार्षिक प्रतिवेदन में इस स्थिति के तीन कारण बताए गए हैं।

पहली वजह यह है कि जलवायु बदलाव के लिए जिम्मेदार जिन ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में 2013-17 के दौरान ठहर. ाव आ गया था उनमें 2018 में फिर वृद्धि दर्ज की गई। जलवायु बदलाव नियंत्रित करने की संभावनाएं समग्र रूप से धूमिल हुई हैं। दूसरी वजह यह है कि परमाणु हथियार नियंत्रित करने के समझौते कमजोर हुए हैं। आईएनएफ समझौते का नवीनीकरण नहीं हो सका। तीसरी वजह यह है कि सूचना तकनीक का बहुत दुरुपयोग हो रहा है जिसका सुरक्षा पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है। इन तीन कारणों के मिले जुले असर से आज विश्व बहुत बड़े संकट की संभावना के अत्यधिक नजदीक आ गया है, और इस संकट को कम करने के लिए जरूरी कदम तुरंत उठाना जरूरी है।

क्या 'डूमस्डे घड़ी' के इस अति महत्त्वपूर्ण संदेश को विश्व नेतृत्व समय रहते समझेगा? हाल के वर्षो में यह निरंतर स्पष्ट होता रहा है कि अब तो धरती की जीवनदायिनी क्षमता ही खतरे में है। जिन कारणों से हजारों वर्षो तक धरती पर बहुत विविध तापूर्ण जीवन पनप सका, वे आधार ही बुरी तरह संकटग्रस्त हो चुके हैं। धरती की जीवनदायिनी क्षमता के संकटग्रस्त होने के अनेक कारण हैं-जलवायु बदल. ाव व अनेक अन्य गंभीर पर्यावरणीय समस्याएं, परमाणु हथियार व अन्य महाविनाशक हथियार आदि। इस बारे में तो निश्चित जानकारी मिल रही है कि ध रती पर जीवन संकट में है, पर इसे दूर करने के लिए समय पर असरदार कदम कैसे उठाए जाएंगे इस बारे में अभी बहुत अनिश्चित स्थिति है। जो प्रयास हो रहे हैं, वे बहुत अपर्याप्त हैं। उससे कहीं अधिक बड़े प्रयास और बड़े बदलाव चाहिए।

यह प्रयास अमन-शांति, पर्यावरण और जीवन के सभी रूपों की रक्षा, लोकतंत्र, समता और न्याय की परिधि में होने जरूरी हैं। इस सभी मुद्दों पर विश्व के विभिन्न देशों में विभिन्न जन-आंदोलन और जन-अभियान पहले से चल रहे हैं। इनके विभिन्न आयाम हैं। उदाहरण के लिए यदि केवल अमन-शांति के आंदोलनों और हिंसा-विरोधी आंदोलनों और अभियानों की बात करें तो किसी भी देश में इनके विभिन्न आयाम हो सकते हैं। बारुदी सु. रंगों या अन्य विशिष्ट छोटे हथियारों के विरुद्ध एक अभियान हो सकता है, तो परमाणु हथियारों जैसे महाविनाशक हथियारों के विरुद्ध एक अलग अभियान। पड़ोसी देशों से संबंध सुधारने के कई अभियान हो सकते हैं। महिला हिंसा, बाल-हिंसा और घरेलू हिंसा के विरुद्ध कई आंदोलन हो सकते हैं। शिक्षा सं. स्थानों व कार्यस्थलों पर होने वाली हिंसा के विरुद्ध अभियान हो सकते हैं। एक बड़ी चुनौती यह है कि अमन-शांति के इन सभी जन-अभियानों और आंदोलनों में आपसी एकता बना कर उन्हें बड़ी ताकत बनाया जाए जिसका असर अधिक व्यापक व मजबूत हो। ये सभी शाखाएं एक-दूसरे की पूरक हों, इनकी अमन-शांति के मुद्दों पर व्यापक व समग्र सोच हो, वे अहिंसा की सोच में गहराई तक पहुंच सकें।

जब अमन-शांति की ये सभी धाराएं परमाणु हथियारों को समाप्त करने के बारे में आम सहमति बनाएं तो इस मांग को बहुत बल मिलेगा। दूसरे शब्दों में, अपनी विशिष्ट मांगों के साथ यह सभी अभियान उन मांगों को भी अपनाएं जो धरती पर जीवन को बुरी तरह संकटग्रस्त कर रही समस्याओं के समाधान से जुड़ी हैं। इस तरह किसी भी देश में बहुत व्यापक स्तर पर धरती की रक्षा की मांग उठ सकती है। फिर सभी देशों से मांग उठेगी तो अपने आप विश्व स्तर पर यह मांग बहुत असरदार रूप से उठ पाएगी। विभिन्न देशों के अमन-शांति के आंदोलनों में आपसी समन्वय हो, एकता हो तो साथ-साथ जोर लगाकर परमाणु हथियारों को समाप्त करने की मांग को वे और भी असरदार ढंग से उठा सकेंगे। यही स्थिति पर्यावरण की रक्षा के आंदोलन की भी है। किसी भी देश में इस आंदोलन के कई अध्याय हो सकते हैं जैसे नदियों के प्रदूषण को कम करना, वायु प्रदूषण को कम करना, प्लास्टिक के प्रदूषण को कम करना आदि। यदि इन विभि. ान्न अभियानों और आंदोलनों का आपसी समन्वय हो तो इनकी आवाज मजबूत बनेगी। इस ओर भी विशेष ध्यान देना होगा कि जो मुद्दे धरती के जीवन को बुरी तरह संकटग्रस्त करने वाले हैं (जैसे जलवायु बदलाव का मुद्दा) उन मुद्दों को पर्यावरण रक्षा के आंदोलन अपने विशिष्ट मुद्दों के साथ-साथ जोर देकर उठाएं।

इस तरह एक ओर पर्यावरण रक्षा के सभी पक्ष एक-दूसरे की सहायता से मजबूत होंगे तथा दूसरी ओर जलवायु बदलाव जैसे धरती को संकटग्रस्त करने वाले मुद्दों को कहीं अधिक व्यापक समर्थन मिलेगा। यदि लगभग सभी देशों में ऐसे प्रयास एक साथ हों तो जलवायु बदलाव जैसे संकट के संतोषजनक समाधान की मांग विश्व स्तर पर बहुत असरदार ढंग से उभर सकेगी। तिस पर यदि इन सभी देशों के पर्यावरण आंदोलनों में साझी कार्यवाही के लिए जरूरी सहयोग हो जाए तो वे एक साथ असरदार ढंग से विश्व स्तर पर आवाज बुलंद कर सकेंगे।

गर्मियों में आरामदाक, लॉन्ग स्कर्ट पहनने का फार्मुला

स्कर्ट चाहे शॉर्ट हो या लॉन्ग, हमेशा ही फैशन में बनी रहती हैं. अब जब पारा चढ़ता जा रहा है तो महिलाओं के लिए स्कर्ट एक बेहद ही आरामदायक और फैशनेबल परिधान है. शायद यही कारण है कि गर्मियों के इस मौसम में हर उम्र की महिलाएं लॉन्ग स्कर्ट पहनना काफी पसंद करती हैं. इतना ही नहीं, मार्केट में लॉन्ग स्कर्ट में ढेरों वैरायटी, कलर व पैटर्न मौजूद हैं. इन्हें केजुअल वियर से लेकर पार्टी तक आराम से कैरी किया जा सकता है. तो आईए जानते हैं लॉन्ग स्कर्ट के पैटर्न व इसे पहनने के तरीके के बारे में.

सभी के लिए स्कर्ट: आमतौर पर महिलाएं सोचती हैं कि केवल लंबी हाइट की स्त्रियों पर ही लॉन्ग स्कर्ट जंचती है. लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है. छोटी या मध्यम हाइट की महिलाएं भी इसे बेहद आसानी से पहनकर अपनी पर्सनालिटी को फ्लॉन्ट कर सकती हैं. बस इसे पहनने का तरीका सही होना चाहिए. मसलन, अगर आपकी हाइट छोटी है तो आप ऐसी स्कर्ट का चयन कीजिए जो आपके टखने से कुछ इंच ऊपर या नीचे हो. आप स्कर्ट के साथ हील्स भी पहन सकती हैं, इससे आप देखने में लंबी लगेंगी.

ऐसे करें मैच: स्कर्ट की एक खासियत यह भी होती है कि इसे किसी के साथ भी टीमअप किया जा सकता है. आप चाहें तो इसे लॉन्ग शर्ट या शॉर्ट ट्यूनिक के साथ पहनें. ठीक इसी प्रकार, इसे डेनिम टॉप के साथ भी कैरी किया जा सकता है. यह लुक देखने में बेहद ही स्टाइलिश लगता है.

परफेक्ट फुटवियर: स्कर्ट तभी कंप्लीट लगती है, जब उसके साथ फुटवियर भी सही पहने जाएं. वैसे तो स्कर्ट के साथ फ्लैट सैंडल्स, स्नीकर्स व स्लीपर्स सभी जंचते हैं. लेकिन पार्टी में स्कर्ट पहनते समय बेहतर होगा कि आप साथ में हील्ड ग्लेडियेटर्स, पम्पस, पीप टोज या डेसी सैंडल्स ही कैरी करें. वैसे लॉन्ग स्कर्टस नी-लेंथ बूट्स के साथ भी काफी अच्छी लगती है.

ओकेजन के हो अनुसार: स्कर्ट पहनते समय यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि आप किस ओकेजन के लिए तैयार हो रही हैं. मसलन, अगर आप स्कर्ट को बतौर फॉर्मल वियर या ऑफिस मीटिंग और डिनर के लिए पहन रही हैं तो आपकी स्कर्ट घुटने से तीन-चार इंच नीचे होनी चाहिए. वहीं केजुअल वियर में आप एंकल लेंथ स्कर्ट पहन सकती हैं. ठीक इसी प्रकार, किसी फंक्शन के लिए स्कर्ट पहनते समय आप एक्स्ट्रा लॉन्ग स्कर्ट भी चूज कर सकती हैं.

आलू का रस पीने के यह 6 फायदे, जरूर जानिए

उबले या कच्चे आलू का प्रयोग आपने सब्जी, चाट या अन्य चीजों में जरूर किया होगा, लेकिन क्या आपने कभी आलू का जूस पिया है?

यदि नहीं पिया तो अब पीना शुरू कर दीजिए क्योंकि इससे आपको मिल सकते हैं, सेहत के बेमिसाल फायदे। फिलहाल जानिए यह 5 फायदे ङ्क

1. कच्चे आलू के रस को पानी के साथ रोजाना आधा कप पिएं और ध्यान रखें कि इसे खाली पेट लें। इससे आपको गैस बनने की समस्या से निजात मिलेगी, जो आजकल एक आम समस्या बन चुकी है।

2. शोध इस बात को साबित कर चुके हैं, कि कच्चे आलू का रस आपको कैंसर, हाइपरटेंशन और किडनी के अलावा कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं से बचा सकता है।

3. अगर आप डाइबिटीज के मरीज हैं तो यह आपके लिए बेहद फायदेमंद चीज है। रक्त में शर्करा के स्तर को कम करने में आलू का रस काफी प्रभावकारी साबित होगा।

4. यह आपकी प्रतिरोधक क्षमता को तो बढ़ाएगा ही, साथ ही लिवर संबंधी समस्याओं का निराकरण कर आपको बिल्कुल स्वस्थ बनाए रखने में भी मददगार होगा।

5. आलू का रस नियमित रूप से लेने पर आपकी त्वचा संबंधी परेशानियां खत्म हो जाएंगी। यह आपकी त्वचा को अंदर से साफ कर उसे पोषण देने के साथ ही चमकदार भी बनाएगा। इसे त्वचा पर लगाने से मुहांसों की समस्या से भी निजात मिलेगी।

6. इसका सेवन करने पर शरीर से सभी हानिकारक तत्वों को बाहर निकालने में मदद मिलेगी और शरीर के सभी अंगों की सफाई होगी।

ट्रैक बदलने की जरूरत

नई दिल्ली में चल रही झ्हार्ट ऑफ एशिया कान्फ्रेंसझ्र से इतर भारत और पाकिस्तान के विदेश सचिव 26 अप्रैल 2016 को वार्ता की मेज पर एक साथ पुन: बैठे और करीब पौने दो घंटे तक बातचीत भी की.

दोनों के बीच कई दौर की बेनतीजा रही बातचीत के बावजूद एक बार पुन: दोनों देशों के प्रतिनिधि यदि एक साथ बैठे हैं, तो इसका स्वागत किया जाना चाहिए क्योंकि यह दोनों देशों और उनकी अवाम के हितों के अनुरूप है. लेकिन संतुष्टि केवल इतने भर से ही नहीं हो जानी चाहिए बल्कि यह भी देखना चाहिए कि आखिर दोनों तरफ से जो विषय प्रस्तुत किए गए वे क्या थे?

अंतत: वार्ता का नतीजा क्या रहा? यानी कोई सार्थक परिणाम आया अथवा एक और वार्ता के लिए सिर्फ रास्ता बना? क्या इस वार्ता में कुछ ऐसा भी दिखा कि पाकिस्तान ने अपनी परम्परागत रास्तों से हटकर बातचीत करने के मनोविज्ञान का प्रदर्शन किया है या वह अब भी अतीत के उस सिण्ड्रोम से ग्रसित है जो उसके मस्तिष्क में भारत के खिलाफ युद्ध की स्थितियों का निर्माण करता रहता है? दुर्भाग्य से यह अब भी जारी है.

क्या वह उन मुद्दों पर मुक्त रूप से वार्ता करने के लिए तैयार है जो भारत की आंतरिक सुरक्षा और सामरिक चिंता का कारण बने हुए हैं? एक सवाल यह भी है कि क्या भारत स्वयं उन मुद्दों को प्रभावशाली ढंग से पेश करने में सफल रहा जिन्हें लेकर दोनों देशों के बीच युद्धोन्मादी वातावरण निर्मित होता है या वार्ताएं टलती हैं अथवा किसी सार्थक परिणाम तक नहीं पहुंचती? यदि नहीं तो फिर इस वार्ता से क्या निष्कर्ष निकाले जाएं? बस सिर्फ इतना ही कि दोनों देशों के प्रतिनिधि साथ बैठने में सफल हुए? अगर ऐसा है तो क्या अब इस बात पर विचार नहीं होना चाहिए कि यदि राजनय का परम्परागत ट्रैक यदि परिणाम देने में असमर्थ साबित हो रहा है तो फिर उसे बदलने की कोशिश हो?

मंगलवार को दोनों देशों के विदेश सचिवों के बीच हुई वार्ता में पाकिस्तान की तरफ से विरोधाभासी बयान आए, जिनसे तकनीकी तौर पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पाकिस्तान अब भी उसी सिण्ड्रोम का शिकार है, जिसका वह 1946-47 में रहा था. उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान के विदेश सचिव एजाज अहमद चौधरी ने अपने भारतीय समकक्ष एस जयशंकर के साथ बातचीत में जहां एक तरफ यह कहा कि उनका देश भारत के साथ दोस्ताना रिश्ते बहाल करने के लिए वचनबद्ध है, वहीं दूसरी तरफ वह यह कहना नहीं भूले कि भारत-पाक के बीच विवाद का असल मुद्दा अगर कुछ है, तो वह है कश्मीर.

वास्तव में बातचीत के दौरान उनके तेवर कुछ ऐसे थे कि जैसे वे वर्ष 2016 में नहीं बल्कि वर्ष 1946-1947 में बात कर रहे हों. इसका तात्पर्य तो यही हुआ कि पाकिस्तान वार्ताओं को किसी निष्कर्ष तक ले जाने देना नहीं चाहता. कश्मीर सिण्ड्रोम के कारण वह मेलजोल के हर मौके को खींच कर 1947 के तुरंत बाद के दिनों में ले जाने की कोशिश करता है, जब कश्मीर का मुद्दा संयुक्त राष्ट्र में उठा था. इसके विपरीत वास्तविकता यह है कि कश्मीर की स्थिति 1947 से लेकर 2016 तक पहुंचते-पहुंचते पूर्णत: बदल गयी है. वहां सामान्य निर्वाचन प्रक्रिया के जरिए सरकार का चुनाव होता है और चुनी हुई सरकारें शासन करती हैं. लेकिन पाकिस्तान इस सच्चाई को स्वीकार ही नहीं करना चाहता, जिसके चलते वह आजादी के बाद से लेकर अब तक भारत के साथ कभी प्रत्यक्ष और कभी छद्म युद्ध लड़ता है.

फिलहाल कोई वार्ता सफल रही या असफल, इस निष्कर्ष पर तत्काल पहुंचना उचित नहीं लगता, बल्कि इसे आगे बढ़ने वाले कूटनीतिक कदमों पर छोड़ दिया जाना चाहिए. 26/11 के आतंकवादी हमले के सात साल बाद पिछले वर्ष 9 दिसम्बर को भारत और पाकिस्तान समग्र द्विपक्षीय वार्ता को फिर से शुरू करने के लिए सहमत हुए थे. लेकिन 2 जनवरी को पठानकोट एयर बेस पर आतंकवादी हमले के कारण यह प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ पाई. लेकिन दोनों देशों के आम लोग चाहते हैं कि अब इन सिलसिलों के निष्कर्ष भी निकलें. कोई दिशा मिले. ऐसा तभी संभव है, जब दोनों देश कूटनीतिक मुद्दों पर आर्थिक व सांस्कृतिक सम्बंधों को अधिक तरजीह दें तथा एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम तय करें जिससे पीपल-टू-पीपल कनेक्टिविटी बढ़े और पाकिस्तान का मनोविज्ञान को बदलने में सफलता मिले. इस दिशा में आगे बढ़े बिना परिणामों की अपेक्षा करना वास्तविकता की अनदेखी मानी जाएगी और वार्ताओं को एक कूटनीतिक औपचारिकता अथवा विवशता.

उत्तराखण्ड के तीन एन०सी०सी० कैडेट्स ने माउंट एवरेस्ट की चोटी पर की चढाई

देहरादून। साहस, दृढता और अनगिनत चुनौतियों को पार करने की अदभुत मिशाल पेश करते हुए उत्तराखण्ड के तीन युवा राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेट्स ने दुनिया की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की है। इन युवाओं ने यह ऐतिहासिक उपलब्धि 18 मई 2025 को प्राप्त की जो यह सिद्ध करती है कि जब सपनों में विश्वास और कठिन परिश्रम होता है तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता ।इन साहसी युवा पर्वतारोहियों – कैडेट वीरेन्द्र सामन्त, 29 उत्तराखण्ड वाहिनी राष्ट्रीय कैडेट कोर, देहरादून, कैडेट मुकुल बंगवाल, 4 उत्तराखण्ड वाहिनी राष्ट्रीय कैडेट कोर, पौडी, कैडेट सचिन कुमार, 3 उत्तराखण्ड वाहिनी राष्ट्रीय कैडेट कोर, उत्तरकाशी ने दुनिया की सबसे ऊँची पर्वत चोटी पर चढ़ाई कर न केवल अपने व्यक्तिगत साहस को परखा, बल्कि यह संदेश भी दिया कि भारत के युवा अगर ठान लें तो कोई भी चुनौती उनके रास्ते में नहीं आ सकती।

इस सफलता पर कैडेट वीरेन्द्र सामन्त ने कहा कि यह हमारी जीत नहीं है, यह हर उस युवा की जीत है जो सपने देखता है। हमने कडी चुनौतियों का सामना किया लेकिन हर कदम पर हमें अपने आप पर, अपनी टीम पर और इस सपने को पूरा करने पर विश्वास था।मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने युवा कैडेट्स को उनकी सफलता पर बधाई देते हुये उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह उपलब्धि केवल इन कैडेट्स की नहीं बल्कि पूरे प्रदेश की है। उनका साहस और समर्पण देश के युवाओं के लिए एक नई प्रेरणा का स्रोत बनेगा। उनकी सफलता एन0सी0सी के मूल्यों, अनुशासन, टीमवर्क और उत्कृष्टता की ओर निरंतर प्रयास का प्रतीक है।

उत्तराखण्ड एन0सी0सी0 के अपर महानिदेशक, मेजर जनरल रोहन आनन्द, सेना मेडल ने कहा कि यह अभियान एन0सी0सी0 के द्वारा आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य भारतीय युवाओं को साहसिक खेलों, नेतृत्व और आत्मनिर्भता के प्रति प्रेरित करना है। इस कठिन यात्रा में इन कैडेट्स ने न केवल विपरीत मौसम का सामना किया, बल्कि मानसिक और शारीरिक थकावट को भी पार किया। फिर भी उनके अथक प्रयासों और टीमवर्क ने उन्हें सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उन्होंने कहा कि एन0सी00सी0 में हम हमेशा कहते हैं कि नेतृत्व कठिन समय में ही पैदा होता है। इन युवा पर्वतारोहियों ने इस सिद्धांत को अपने कार्यों से साबित किया है। इन कैडेट्स ने जो किया है वह भावी पीढी को प्रेरित करेगा, ताकि वे अपने डर को पार कर सकें और असाधारण उपलब्धियां हासिल कर सकें। उन्होंने कहा, यह सफलता सिर्फ इन कैडेटस की नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की है। उनकी यात्रा हमारे युवा शक्ति, एकता की ताकत और असंभव को संभव बनाने की अदम्य इच्छा का प्रतीक है।

इस यात्रा में इन कैडेट्स को अनुभवी पर्वतारोहियों, प्रशिक्षकों और एन0सी0सी0 के मार्गदर्शकों का पूरा सहयोग प्राप्त था। इसके अलावा, उत्तराखण्ड पर्यटन विकास बोर्ड, भारतीय सेना की पर्वतारोहण टीम और स्थानीय संगठनों ने इस अभियान की सफलता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पंचम अध्यक्ष और गौरव मंत्री बने

रुद्रप्रयाग। राजकीय शिक्षक संघ ऊखीमठ ब्लॉक के द्विवार्षिक अधिवेशन में नई कार्यकारिणी का गठन करते हुए पंचम सिंह राणा को अध्यक्ष बनाया गया। जबकि संयुक्त मंत्री पद पर गौरव असवाल नामित हुए। सभी पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। इस दौरान गोष्ठी का आयोजन कर शिक्षा और संगठन की मजबूती को लेकर चर्चा की गई। राशिसं के द्विवार्षिक ब्लॉक अधिवेशन में बतौर मुख्य अतिथि रुद्रप्रयाग संघर्ष समिति के अध्यक्ष त्रिभुवन चौहान ने कहा कि शिक्षक समाज का आईना होते हैं। शिक्षक समाज के मूल्यों, नैतिकता और व्यवहार को प्रतिबिंबित करते हैं। शिक्षक समाज को दिशा देते हैं और बच्चों को शिक्षित करते हैं, जो बदले में समाज को आकार देते हैं। उन्होंने कहा कि आज के समय में स्थिति ऐसी है कि शिक्षक अपनी मांगों को लेकर संघर्ष करते नजर आ रहे हैं। सरकार की नाकामियों के कारण शिक्षक परेशान हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की समस्याओं के निराकरण को लेकर एकजुटता को लेकर संघर्ष किया जाएगा। नवनियुक्त ब्लॉक अध्यक्ष पंचम सिंह राणा एवं संयुक्त मंत्री गौरव असवाल ने कहा कि संगठन ने जो जिम्मेदारी उन्हें दी है, उसका निर्वहन ईमानदारी के साथ किया जाएगा। शिक्षकों की समस्याओं को लेकर संघर्ष किया जाएगा। इस दौरान नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें ब्लॉक अध्यक्ष पंचम राणा के अलावा उपाध्यक्ष कैलाश गार्ग्य, महिला उपाध्यक्ष रीना गैड़ी, ब्लॉक महामंत्री दिलवर कोतवाल, संयुक्त मंत्री गौरव असवाल, संयुक्त मंत्री (महिला) पिंकी भंडारी के साथ आय-व्यय निरीक्षक अरविंद नेगी को मनोनीत किया गया।

भिलंगना में ओलावृष्टि से फसलों को हुआ नुकसान

नई टिहरी(आरएनएस)। भिलंगना ब्लॉक क्षेत्र में भारी ओलावृष्टि से खेतों में तैयार सब्जी,फल और फसलें बर्बाद हो गई हैं। जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। उन्होंने शासन-प्रशासन से मुआवजे की मांग की है। घनसाली की कोटी फैगुल पट्टी स्थित बनचुरी, इंद्रोला,गोजिया सहित आधा दर्जन गांवों में मंगलवार शाम को अचानक हुई ओलावृष्टि से किसानों की फसलें बर्बाद हो गई हैं। ग्रामीण गौरव राजपूत ने बताया कि ओलावृष्टि से गेंहू, आलू, मटर, बीन सहित चुलू, खुमानी, अखरोट, माल्टा, नींबू, आड़ू, आदि के फलों को काफी नुकसान हुआ है। ग्रामीण अषाढ़ सिंह रावत, कलम सिंह, पूर्ण सिंह, मकान सिंह रावत, मान सिंह, मनोज सिंह आदि ग्रामीणों की फसलों को नुकसान है। जिसके लिए मुआवजा दिया जाना चाहिए। तहसीलदार हरीश जोशी ने बताया कि ओलावृष्टि से हुए नुकसान के आंकलन को लेकर राजस्व उप निरीक्षक को मौके पर भेजकर रिपोर्ट मांगी है। वहीं राजस्व उप निरीक्षक नरेश भट्ट ने बताया कि मंगलवार को कोटी फैगुल के इंद्रोला, बनचुरी और निकटवर्ती गांवों में भारी ओलावृष्टि से किसानों के गेहूं, आलू, बीन, मटर आदि सब्जियों को नुकसान हुआ है। जिसका मौके पर मुआयना किया जा रहा है। जल्द ही रिपोर्ट तैयार कर तहसील प्रशासन को उपलब्ध कराई जाएगी।

सीडीओ त्रिपाठी ने जन्म मृत्यु पंजीकरण जिला स्तरीय अन्तर्विभागीय समन्वय समिति की बैठक ली

चमोली। मुख्य विकास अधिकारी अभिषेक त्रिपाठी ने बुधवार को कलेक्ट्रेट वीसी रूम में जन्म मृत्यु पंजीकरण जिला स्तरीय अन्तर्विभागीय समन्वय समिति की बैठक ली।

मुख्य विकास अधिकारी ने सीएमओ को संस्थागत प्रसव के केस में 24 घण्टे या पेशेंट के हॉस्पिटल से डिस्चार्ज के समय जन्म प्रमाण देने के निर्देश दिए। उन्होंने पंजीकरण करने वाले संस्थानों को परिसर में पंजीकरण संबंधी बोर्ड लगाने के निर्देश दिए। जनगणना निदेशालय देहरादून के अधिकारी हेमन्त ने बताया कि सिविल रजिस्ट्रेशन सिस्टम पोर्टल पर जन्म एवं मृत्यु की घटनाओं का पंजीकरण किया जाता है। 02 दिसम्बर 2024 को लागू उत्तराखंड जन्म मृत्यु पंजीकरण संशोधित नियमावली के अनुसार उत्तराखंड में जन्म मृत्यु पंजीकरण किया जा रहा है। जिला स्तर पर जिला मजिस्ट्रेट रजिस्ट्रार व सीएमओ सब रजिस्ट्रार व स्थानीय स्तर पर निकायों में ईओ व ग्राम पंचायतों में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी रजिस्ट्रार व सरकारी अस्पतालों में संबंधित मुख्य अधिकारी रिपोर्ट करेंगें। नियमावली 2024 के अनुसार 21 दिन के अन्दर जन्म या मृत्यु का पंजीकरण कराने के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। 21 से 30 दिन के अन्दर 20 रुपये, 30 दिन से 100 दिन के अन्दर 50 रुपये तथा एक साल से अधिक 100 रुपये विलंब शुल्क लिया जाता है। जन्म व मृत्यु प्रमाण पत्र जन्म व मृत्यु के स्थान व तिथि का कानूनी प्रमाण है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आफॅसेट प्रिंटर्श 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 98, 2-फ्लोर, सनशाइन अपार्टमेन्ट, नागल हटनाला, कुल्हान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून - 248001 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।